ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 165-169
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

बहुमुखी प्रतिभा के धनी महामना पं0 मदन मोहन मालवीय (एक समाज वैज्ञानिक अध्ययन)

महेश कुमार पाण्डेय
हेमवती नन्दन बहुगुणा पी0जी0 कालेज, लालगंज, प्रतापगढ़ (उ0प्र0), भारत

Received- 14.08.2020, Revised- 18.08.2020, Accepted - 21.08.2020 E-mail: - rksharpur2@gmail.com

सारांश : ***भारतवर्ष की शस्य श्यामल पुण्य भूमि अनादिकाल से ही अनेकानेक विद्वानों एवं मनीषियों से परिपूर्ण रही है, जो अपने क्रान्तिकारी विचारों, महान व्यक्तित्व एवं कृतित्व के कारण न केवल भारत में अपितु विश्व राष्ट्रों एवं विद्वानों में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं और सम्मान की दृष्टि से देखे जाते है। ऐसे महान कर्मयोगी, युगपुरुष, क्रान्तिकारी, शिक्षाविद् .... महामना पं0 मदन मोहन मालवीय को इनके विलक्षण व्यक्तित्व के कारण कौन नहीं जानता।***

कुंजीभूत शब्द– पुण्य भूमि, अनादिकाल, विद्वानों, मनीषियों, परिपूर्ण, क्रान्तिकारी विचारों, महान व्यक्तित्व ।

पं0 मदन मोहन मालवीय जी का जन्म 25 दिसम्बर 1861 को[1] उत्तर प्रदेश के प्रमुख नगर गंगा, यमुना अदृश्य सरस्वती की संगम स्थली तीर्थराज प्रयाग की पवित्र भूमि पर हुआ था। आपके पिताजी का नाम पं0 बृजनाथ मालवीय एवं माता जी का नाम श्रीमती मूना देवी था।[2] पं0 जी के पूर्वज मालवा देश के निवासी थे, इसी कारण से ये मालवीय कहलाये। इनके पिता पं0 बृजनाथ मालवीय जी ने इनकी प्रारम्भिक शिक्षा की व्यवस्था 'धर्म ज्ञानोपदेश पाठशाला' में करायी। इसके बाद इन्हे 'विद्याधर्म प्रवर्धिनी' में प्रवेश दिलाया। सन् 1884 में इन्होंने बी0ए0 की परीक्षा उत्तीर्ण की तत्पश्चात् इन्होनें वकालत की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। इन्होंने अपना सर्वप्रथम भाषण अंग्रेजी में 'म्योर सेन्ट्रल कालेज' की डिवेटिंग सोसाइटी में दिया था। इनका विवाह 14 वर्ष की आयु में नन्दराम मालवीय की पुत्री कुन्दन देवी[3] से हुआ था।

महामना पं0 मदन मोहन मालवीय एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक.............. जीवन का कोई क्षेत्र इनसे अछूता नहीं रहा। समाज सुधार के क्षेत्र में बाल–विवाह, लगान वसूली, रौलेट एक्ट का विरोध, भारतीय समाज एवं संस्कृति के अनुरक्षण, हिन्दी एवम् संस्कृत भाषा के संवर्द्ध एवम् विकास आदि के क्षेत्र में इन्होंने उल्लेखनीय योगदान दिया। उनकी उदारता एवम् विशाल ह्रदय के अनेक उदाहरण मिलते हैं। एक बार विश्वविद्यालय का एक कर्मचारी गबन करता पाया गया। जब वह पकड़ा गया तो भयवश उसने आत्महत्या का प्रयास किया, परन्तु इलाज के पश्चात् किसी तरह बच गया, मालवीय जी ने जब उससे कारण जानना चाहा तो उसने उनके पाँव पकड़ लिया और अपनी दयनीय पारिवारिक स्थिति का बयान करने लगा। मालवीय जी ने उससे कहा तो तुम्हें मुझसे कहना चाहिए था, उद्यम् करना चाहिए था, आत्महत्या तो कायरता है............ उन्होंने न सिर्फ उसे माँफ किया, अपितु उसके लिए अतिरिक्त धन की व्यवस्था भी की और भविष्य में चोरी न करने का उपदेश दिया। इनके व्यक्तित्व के सम्बन्ध में पूर्व राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद जी ने कहा था कि– ''सन् 1922 का जमाना था, महात्मा गाँधी, सरदार पटेल, जवाहर लाल नेहरू इत्यादि सभी नेता जेल में थे। केवल मैं और मालवीय जी बाहर थे। आसाम से वहाँ के भीषण सरकारी

दमन की खबर आयी। कांग्रेस का नाममात्र लेने वालों को गिरफतार कर उसके गाँव को ही बर्बाद कर देना कांग्रेस कमेटियों के दतरों, मकानों को जला देना इत्यादि चला रहा था।......... ऐसे स्थान पर जब हम लोग मालवीय जी के साथ गए तो लोगों की जान में जान आयी, और लोग जागे। .... मालवीय जी के अफीम बॉयकाट आन्दोलन का फल यह हुआ कि कम से कम थोड़े ही दिनों के लिए दुकानों से अफीम की बिक्री बन्द हो गयी और सरकार को काफी घाटा उठाना पड़ा।''[4]

प्रसाद जी के विचारों में महामना जी के व्यक्तित्व में हिमालय जैसी स्थिरता, अपार साहस, चुनौतियों के समक्ष कभी पराजित न होने वाली संकल्पना शक्ति कूट–कूट भरी हुयी थी। राधेश्याम कथा वाचक जी ने पं0 मदन मोहन के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है कि–

''महामना मालवीय जी महराज ऐसे व्यक्ति थे, जिनमें न मद था, न मोह। एक अथक धुन और लगन उनकी महाशक्ति बन गयी थी। शरीर पर न तो कोई ध्यान और न ही घरवालों को कोई ध्यान। सभी समय सोते, जागते ''जनहित'' ही उनका एकमात्र ध्येय था। 'ब्राह्मण का आदर्श', 'सनातन धर्म की रक्षा', हिन्दी प्रेम, शिक्षा का लक्ष्य,

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

गो भक्ति हिन्दू समाज की अभ्युन्नति, देश को स्वतंत्र कराने की आग.......... आदि उनके किन–किन गुणों का बखान मैं करुँ? मैंने तो ऐसा चतुर्मुखी व्यक्तित्व का नेता देखा ही नहीं, और न ही भविष्य में देखने की संकल्पना ही की जा सकती है।"[5]

सन् 1962 में लालबहादुर शास्त्री जी जब भारत सरकार में गृहमंत्री थे, उन्होंने मालवीय जी पर अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा था– "मालवीय जी का व्यक्तित्व अद्‌भुत और अनूठा था। वे धवल वस्त्रधारी थे। वस्त्रों की ही भाँति उनका विषाल हृदय भी स्वच्छ निर्मल एवम् पवित्र था। द्वेष उनके समीप नहीं फटकता था। ईर्ष्या के वशीभूत होकर वे कोई भी कार्य नहीं करते थे, मालवीय जी का स्थान प्रमुख और वरिष्ठ राष्ट्रीय नेताओं में रहा और स्वतंत्रता संग्राम में सदा आगे रहे।......... यह सच है कि गाँधी जी और मालवीय जी के विचारों एवम् कार्य पद्धतियों में काफी अन्तर था, परन्तु गाँधी जी मालवीय जी का बड़ा सम्मान करते थे। गाँधी जी सदा ही उनको बड़ा भाई मानते थे और मालवीय जी भी उनको उसी के अनुरूप सम्मान प्रदान करते थे। मालवीय जी नैतिकता के पुजारी थे। सच तो यह है कि उनकी नैतिकता ने वे जिधर विचरे उनको श्रेष्ठतम् स्थान प्रदान किया।[6] जिसकी पुष्टि राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के सम्बन्ध में कही गयी पंक्तियों के माध्यम से की जा सकती है–

चल पड़े जिधर दो डग–मग में।
चल पड़े कोटि पग उसी ओर।।
पड़ गयी जिधर भी एक दृश्टि।
गड़ गए कोटि दृग उसी ओर।।

पं0 जवाहर लाल नेहरू ने मालवीय जी के सम्बन्ध में लिखा है– "जहां तक भारतीय राजनीति का सम्बन्ध है, मेरे बचपन की अत्यन्त प्रारम्भिक स्मृतियाँ पं0 मदन मोहन मालवीय के साथ सम्बद्ध हैं। मालवीय जी एक मानव मात्र नहीं अपितु एक महामानव थे।[7] वे उन लोगों में से थे, जिन्होंने आधुनिक भारतीय राष्ट्रीयता की नींव रखी। गाँधी जी उन्हें 'आधुनिक भारत का निर्माता' कहते थे।[8]

पं0 जी हिन्दू धर्म के घोर हिमायती थे, तथा वैदिक सनातन धर्म के प्रति उनकी अगाध आस्था थी। वे कहते थे कि– 'हिन्दू धर्म को राष्ट्रधर्म घोषित होना चाहिए'। श्री सांवलिया बिहार लाल वर्मा के अनुसार– "धार्मिक विचारों की दृष्टिकोण से लोकमान्य तिलक यदि सच्चे हिन्दू थे तो मालवीय जी कट्टर प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति के अनुपोषक थे, इनके प्रत्येक आचरण में भारतीय जीवन पद्धति, आचार–विचार, आहार–व्यवहार प्रतिबिम्बित होता था। हिन्दू धर्मशास्त्रों में कर्मकाण्ड और धर्माचरण की निष्ठा पर जितना बल दिया गया है उसकी साक्षात् प्रतिमूर्ति थे और लोगों को भी उसे मनवाने हेतु बल देते थे।"[9]

यद्यपि मालवीय जी हिन्दू धर्म में अगाध निष्ठा रखते थे परन्तु अन्य धर्मों का भी सम्मान करते थे। इस सम्बन्ध में डॉ0 कृष्णदत्त द्विवेदी ने लिखा है कि– मालवीय जी सदा कहते थे कि एक हिन्दू को जितना अपने धर्माचरण का अधिकार है उतना ही अधिकार एक मुसलमान एवं ईसाई को भी है। यदि एक मुसलमान सच्चा मुसलमान है और हिन्दू सच्चा हिन्दू तो टकराव का कोई प्रश्न ही नहीं है ....। परन्तु वे साम्प्रदायिक आधार पर तुष्टीकरण की नीति के सख्त विरोधी थे। साम्प्रदायिक दृष्टिकोण रखने वाले मुसलमानों से वे निवेदन करते थे कि– "केवल धर्म एवं संस्कृति के नाम पर संघर्ष उचित नहीं है। अपनी प्यारी जन्म भूमि के नाम पर मैं समस्त हिन्दुओं एवं मुसलमान भाइयों से अपील करता हूँ कि यदि वे चिरकाल तक शान्ति चाहते हैं, संकुचित, वैयक्तिक, धार्मिक, संकीर्णता की विचारधारा से ऊपर उठे और सुख पूर्वक रहते हुए अपने–अपने धर्म का अनुपालन करें। जिसमें किसी भी प्रकार की बाधा संवैधानिक एवं सामाजिक दृष्टि से नहीं है और यदि मुसलमान भाई ऐसा नहीं कर सकते हैं और अभी भी वे अपनी संकीर्ण भावनाओं का परित्याग नहीं कर सके हैं, तो वे निःसंदेह पाकिस्तान चले जायें। परन्तु यदि वे हिन्दुओं के साथ शान्तिपूर्वक रहना चाहते हैं तो उन्हें निश्चय ही अपने धर्म के साथ ही हिन्दुओं के धर्म का भी आदर करना पड़ेगा।"[10]

धर्म की ही भाँति मालवीय जी में स्वदेशी की भावना भी कूट–कूट कर भरी थी। इंग्लैण्ड की मुक्त व्यापार नीति के कारण देश में महान आर्थिक संकट उत्पन्न हो जाने की आशंका से सन् 1981 में उन्होंने लोगों से स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग की अपील की तथा देश को आर्थिक संकट से उबारने के लिए लोगों को प्रेरित भी किया। टी0वी0 पार्वते– आपके स्वदेशी आन्दोलन के सम्बन्ध में लिखते हैं कि– "मालवीय जी चाहते थे कि उनके देशवासी विदेशी वस्तुओं के अनुपात में स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग एवं प्रचार करें। क्योंकि इस नीति का अंततः देश की समृद्धता पर व्यापक प्रभाव पड़ेगा। स्वदेशी आन्दोलन में विदेशी वस्त्रों की होली जलाने के स्थान पर उनका मत था, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार तथा स्वदेश में निर्मित वस्तुओं को खरीदना प्रत्येक भारतीय को अपने जीवन का एक अभिन्न अंग बनाना चाहिए क्योंकि इस प्रकार की मनोवृत्ति से जुलाहों और कृषक श्रमिकों को जो भूख से बेहाल हैं, रोजी–रोटी प्राप्त होगी।"[11]

सन् 1934 में कालपी में आयोजित स्वदेशी प्रदर्शन के

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

अवसर पर महामना जी ने कहा था कि– "जिस प्रकार अंधियारे में लालटेन सहायक होती है, उसी भाँति देश के वर्तमान दुःख और दरिद्रता की दशा में स्वदेशी का व्रत हमारा सहायक होगा। यह एक ऐसा पुनीत कार्य है जिसमें कि अपना भी भला है और अपने देश के अनेक अन्य भाई–बहनों का भी।............. जैसे ईश्वर की पूजा करना धर्म है, उसी प्रकार देष की सेवा धर्म के अनुपालन का सबसे अच्छा साधन स्वदेशी वस्तुओं का निर्माण करना, स्वदेशी वस्तुओं को अपनाना एवं खरीदना भी है। इसके विक्रय को प्रोत्साहित करने के लिए प्रत्येक जनपद में समय–समय पर स्वदेशी मेला अथवा प्रदर्शनी लगाये जाने की व्यवस्था की जानी चाहिए। जिसमें स्वदेश में बनी हुई वस्तुएँ प्रदर्शित की जाएं और बेची जाएं।........ इससे देश के कल्याण के साथ ही देशवासियों की दरिद्रता भी दूर होगी, देश की सम्पत्ति में वृद्धि होगी एवं प्रजा में धन–बल के साथ धर्म बल भी बढ़ेगा।"[12]

अन्य क्षेत्रों की ही भाँति मालवीय जी ने भारतवासियों के राजनीति को स्वस्थ्य एवं गौरवशाली बनाने में अपने चतुर्मुखी व्यक्तित्व का प्रयोग किया था। राजनीति के क्षेत्र में इनकी पहचान एक उदारवादी नेता के रूप में थी। मालवीय जी के विचार फिरोजशाह मेहता एवं गोपालकृष्ण गोखले के विचारों से काफी हद तक मिलते थे। ये स्वतंत्रता, समानता और न्याय के सिद्धान्तों पर विश्वास मात्र ही नहीं करते थे, अपितु उसे प्रदान करने हेतु सदैव प्रयत्नशील रहे। मालवीय जी का मानना था कि– इस प्रकार की भावना व भावनात्मक एकता ब्रिटिश सरकार को भारतीय माँगो को स्वीकार करने के लिए बाध्य करेगी। अंग्रेजों की नितियाँ सदैव "फूट डालो और राज्य करो" पर आधारित थी। क्योंकि वे भारतीयों की कमियों से परिचित हो गये थे उनको पूरा ज्ञान हो गया था कि धर्म, सम्प्रदाय, जाति, छुआ–छूत आदि अनेकानेक समस्याओं से ग्रसित भारतीय कभी भी एकता के सूत्र में बंध ही नहीं सकते। इसी कारण थोड़े से अंग्रेजों ने हम भारतवासियों पर सैकड़ो वर्षों तक शासन किया। इसी कमी को दूर करने हेतु मालवीय जी सदैव प्रयत्नशील रहे। अपने इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सन् 1880 में इन्होंने इलाहाबाद में 'हिन्दू समाज' नामक संस्था की स्थापना की।[13]

सन् 1886 में मालवीय जी ने कांगेस के द्वितीय अधिवेशन जो कि कोलकाता में हो रहा था और इसके अध्यक्ष दादा भाई नैरोजी थे, में इसकी सदस्यता ग्रहण की। अपने इस प्रथम अधिवेषन में ही उन्होंने भारतीय नागरिकों के अधिकार के सम्बन्ध में भाशण दिया था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 1887 के तृतीय अधिवेशन में जो कि चेन्नई में हो रहा था और जिसके अध्यक्ष बदरुद्दीन तैयाबजी थे मालवीय जी ने 'स्वराज की माँग' के परिप्रेक्ष्य में अपने भाषण में कहा था कि–"जब हम यह माँग करते हैं कि राज्य की परिषदों में जनता के प्रतिनिध जाएं तो हम उसी चीज की माँग कर रहे हैं, जिसे यूरोप में ही नहीं, वरन् अमेरिका, आस्ट्रेलिया और लगभग सम्पूर्ण संसार में एक स्वर से किसी देश के सुशासन के लिए आवश्यक घोषित किया है।"[14]

कांग्रेस के 23 वें अधिवेशन में जो कि सन् 1907 में सूरत में हुआ था और इसके अध्यक्ष डॉ0 रास बिहारी बोस थे में मत वैभिन्नता के कारण कांग्रेस में विभाजन हो गया और यह गरम दल और नरम दल में बँट गया। मालवीय जी की कांग्रेस की नीतियों में निष्ठा और उनके भव्य व्यक्तित्व और भाषण की अद्भुत क्षमता से प्रभावित होकर इन्हें कांग्रेस के 25 वें अधिवेशन का अध्यक्ष बनाया गया जो कि 1909 में लाहौर में सम्पन्न हुआ।15 वर्श 1910 में16 मालवीय जी केन्द्रीय विधान परिषद के सदस्य चुने गये तथा 1920 तक ये इसके सदस्य बने रहे। मालवीय जी पुनः अपनी सूझ–बूझ एवं वाक्य पटुता के कारण कांग्रेस के 35 वें अधिवेशन के अध्यक्ष चुने गये।17 यह अधिवेशन वर्ष 1918 में दिल्ली में सम्पन्न हुआ। सन् 1915 में मालवीय जी ने हरिद्वार में 'हिन्दू महासभा' नामक धार्मिक संगठन की स्थापना की।[18]

मालवीय जी लोगों के कष्ट का प्रमुख कारण अशिक्षा या अज्ञानता को ही मानते थे इस सम्बन्ध में उन्होंने कहा था कि–

विद्या बिना मति गयी, मति बिना नीति गयी।
नीति बिना गति गयी, गति बिना वित्त गया।
वित्त बिना शूद्र गए, इनते अनर्थ एक अविद्या ने किए।।

समाज में व्याप्त अशिक्षा को दूर करने तथा भारतवासियों को उच्च शिक्षा स्वदेश में ही प्रदान करने की उनकी लालसा (अभिलाषा) की पूर्ति उस समय हुई जब सन् 1916 में इन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की।[19] इसकी स्थापना हेतु अपार धन की आवश्यकता थी जिसे उन्होंने देश–विदेश के धनाड्य लोगों से चन्दा लेकरके पूर्ण किया। इसके लिए उन्होंने भिखारियों से भी दान लेने में संकोच नहीं किया, जिसके फलस्वरूप इन्हें– 'भिखारी सम्राट'[20] की संज्ञा भी प्राप्त हुई। इसके सम्बन्ध में गाँधी जी ने कहा था कि– ".......... उनके काम बहुत हैं। बहुत बड़े है। उनमें सबसे बड़ा काम हिन्दू विश्वविद्यालय है। गलती से हम उसे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के नाम से जानते हैं। मालवीय जी का प्रिय नाम तो हिन्दू विश्वविद्यालय ही था।" इसकी स्थापना के सम्बन्ध में मालवीय जी के उद्देश्य

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

कुछ इस प्रकार हैं–

"हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना इसलिए की गई है कि यहाँ के छात्र विद्या भी प्राप्त करें और साथ ही अपने धर्म और देश के सच्चे सेवक भी बनें। यह विश्वविद्यालय दोनों के लिए है। यहाँ के द्वार सबके लिए खुले हैं। सच्चरित्रता हमारे विश्वविद्यालय का मूलमंत्र है, और यही हमारी एवं इसकी शोभा भी है। केवल डिग्री देने के लिए तो बहुत से विश्वविद्यालय बने हुए हैं। हम प्रत्येक छात्र को शुद्ध, सात्विक, तेजस्वी और धीर–बीर बनाना चाहते हैं, जो ईश्वर में विश्वास करें, प्रत्येक प्राणी का आदर करें। वीरता के साथ अन्याय का विरोध करें और आत्म सम्मान के साथ, सच्चाई का और देश का कल्याण कर सकें।"[22]

सन् 1918 ई0 में कांग्रेस के 35 वें अधिवेशन के अवसर पर दिल्ली में भाषण देते हुए इन्होंने कहा था कि– "हमें यह जानकार प्रसन्नता हुई कि इंग्लैण्ड और फ्रांस ने सीरिया और मेसोपोटामिया के सम्बन्ध में आत्म निर्णय के सिद्धान्त को लागू करना स्वीकार कर लिया है। इससे हमारी भी यह आशा दृढ़ हो गयी है कि, भारत के लिए भी इसे लागू किया जाएगा।"[23]

सन् 1920 ई0 में कांग्रेस के 37 वें अधिवेशन में मालवीय जी ने विपिन चन्द्रपाल, श्रीमती ऐनी बेसेण्ट और सी0आर0 दास के साथ महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन प्रस्ताव का विरोध किया तथा 1920 के गाँधी जी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन के सम्बन्ध में बन्दी बनाया गया था। इसके पश्चात् मालवीय जी ने वर्श 1931 में गाँधी जी के नेतृत्व में 7 सितम्बर से 1 दिसम्बर 1931 तक द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया।23 वर्ष 1933 ई0 में कांग्रेस के 51 वें अधिवेशन के लिए पं0 मालवीय जी को पुनः अध्यक्ष चुना गया। यह अधिवेशन कलकत्ता में हुआ तथा अधिवेशन की अध्यक्षता मालवीय जी नहीं नलिनी सेन गुप्त ने किया।[25] मालवीय जी निष्चित रूप से भारतीय संस्कृति, हिन्दू धर्म और आदर्शों के समर्थक थे। वे हिन्दू–धर्म की मान्यताओं व मूल्यों के प्रबल पक्षधर थे। स्वतंत्रताकालीन मालवीय जी की लेखन सामग्रियों में अभ्युदय 26 लीडर, हिन्दुस्तान विशेष रूप से महत्वपूर्ण रहे हैं जिसके माध्यम से ये अपने बहुमूल्य विचारों को भारतीय जनमानस तक पहुँचाते रहे।[27]

इनका सम्पूर्ण जीवन अथक परिश्रम, लगनशीलता, कर्तव्यपरायणता, धर्मनिष्ठा, दृढ़ संकल्प शक्ति एवं उच्च महत्वाकांक्षाओं से परिपूर्ण था। मालवीय जी ने भारत एवं भारतवासियों के उत्कर्ष के लिए अपने सम्पूर्ण जीवन को समर्पित कर दिया था। 12 नवम्बर सन् 1946 में28 भारतीय नक्षत्र मण्डल का यह दैदीप्यमान सितारा सदा के लिए अस्त हो गया। परन्तु उनके कृत्यों ने उन्हें अमर बना दिया जो राष्ट्रीय अस्तित्व के साथ ही सदा विद्यमान रहेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह डॉ0 वी0एन0 : भारतीय सामाजिक चिन्तन, विवेक प्रकाशन दिल्ली, 2008, पृष्ठ 369.
2. सिंह डॉ0 वी0एन0 : भारतीय सामाजिक चिन्तन, विवेक प्रकाशन दिल्ली, 2008, पृष्ठ 369.
3. वही।
4. वही, पृष्ठ 371.
5. कथावाचक राधेश्याम : मालवीय जी जीवन झलकियाँ, पृष्ठ 200.
6. शास्त्री लालबहादुर : मालवीय जी जीवन झलकियाँ
7. सिंह डॉ0 वी0 एन0 : भारतीय सामाजिक चिन्तन, विवेक प्रकाशन दिल्ली, 2008, पृष्ठ 423.
8. वही, पृष्ठ 273.
9. वर्मा श्री सांवलिया बिहारी लाल : विश्व धर्म दर्शन, पृष्ठ 453.
10. द्विवेदी डॉ0 कृष्णदत्त : भारतीय पुर्नजागरण एवम् महामना पं0 मदन मोहन मालवीय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ।
11. पार्वते टी0 वी0 : मेकर्स ऑफ इण्डिया, पृष्ठ 61–62
12. सम्पादकीय : लाइफ एण्ड स्पीचेजस ऑफ पं0 मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 416.
13. सिंह, डॉ0 वी0 एन0 : भारतीय सामाजिक चिन्तन, विवेक प्रकाशन दिल्ली, 2008, पृष्ठ 369.
14. वही, पृष्ठ 375.
15. सिंह सुनील कुमार : लूसेण्ट सामान्य ज्ञान, लूसेण्ट पब्लिकेशन पटना 4, जून 2008, पृष्ठ 91.
16. सिंह डॉ0 वी0 एन0 : भारतीय सामाजिक चिन्तन, विवेक प्रकाशन दिल्ली, 2008, पृष्ठ 369.
17. सिंह सुनील कुमार : लूसेण्ट सामान्य ज्ञान, लूसेण्ट पब्लिकेशन पटना 4, जून 2008, पृष्ठ 91.
18. सामान्य अध्ययन : विशिष्ट अध्ययन सामग्री श्रृंखला–2, समसायिक घटना चक्र प्रकाशन, इलाहाबाद, 2001, पृष्ठ 57.
19. वही, पृष्ठ 58.
20. सिंह डॉ0 वी0 एन0 : भारतीय सामाजिक चिन्तन, विवेक प्रकाशन दिल्ली, 2008, पृष्ठ 369.
21. वर्मा ईश्वरीय प्रसाद : मालवीय जी के सपनों का भारत, पृष्ठ 545.
22. चन्द्र डॉ0 संसार : भारत के अनुकरणीय महापुरुष, पृष्ठ 60.

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

23. सिंह डॉ0 वी0 एन0 : भारतीय सामाजिक चिन्तन, विवेक प्रकाशन दिल्ली, 2008, पृष्ठ 376.
24. सिंह डॉ0 वी0 एन0 : भारतीय सामाजिक चिन्तन, विवेक प्रकाशन दिल्ली, 2008, पृश्ठ 370, सिंह सुनील कुमार : लूसेण्ट सामान्य ज्ञान, लूसेण्ट पब्लिकेशन पटना 4, जून 2008, पृष्ठ 73.
25. चाणक्य, सिविल सर्विसेज टुडे, अंक–3, मार्च 2004, पृष्ठ 111.
26. वही, पृश्ठ 107.
27. सिंह सुनील कुमार : लूसेण्ट सामान्य ज्ञान, लूसेण्ट पब्लिकेशन पटना 4, जून 2008, पृष्ठ 89.
28. महान व्यक्तित्व : पायनियर प्रिंटर्स, 2010–11, पृष्ठ 66–68.

*****